

बनारस आयुर्वेद सीरीज ४२

मुनिकुचिमारप्रणीत

कुचिमार तन्त्रम्

हिन्दी अनुवाद सहित

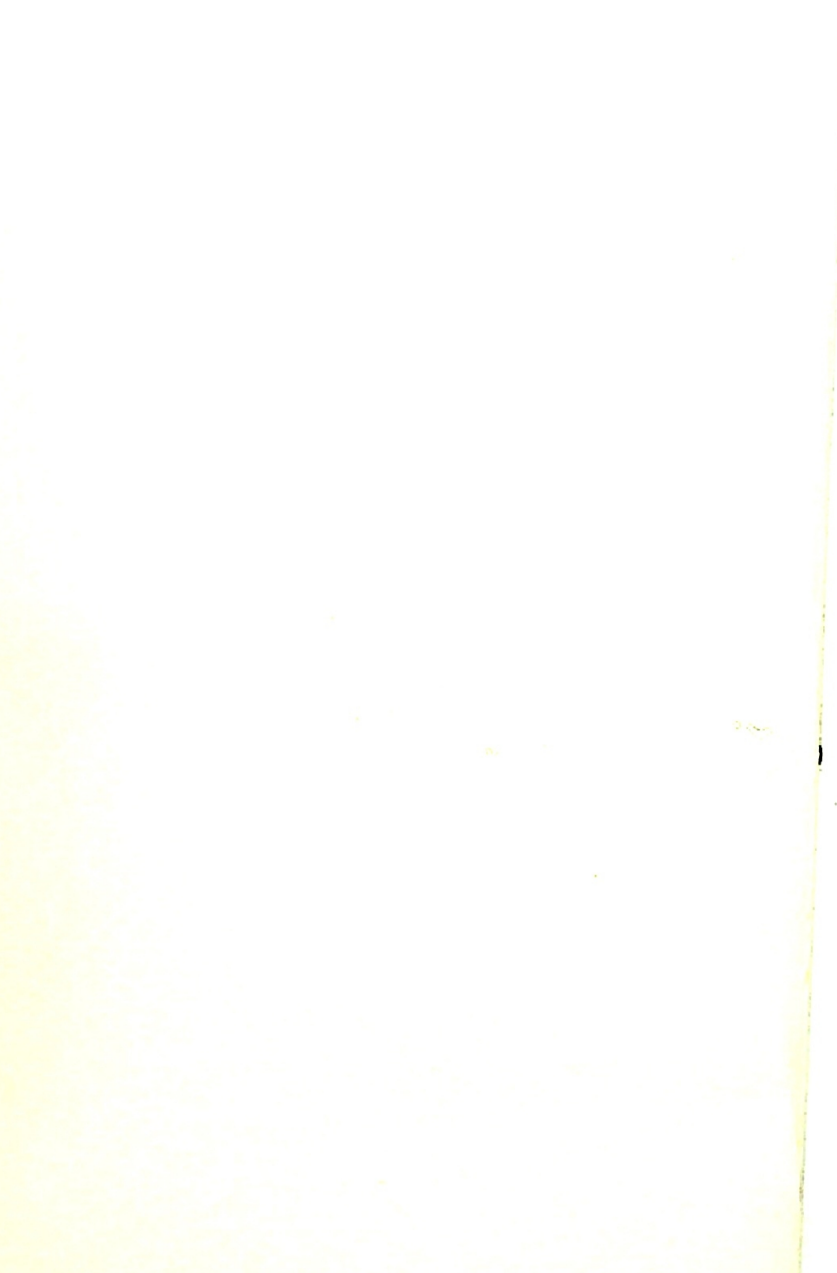


अनुवादक

डॉ. कृष्णकान्त पाठक



चौखम्बा संस्कृत सीरीज आफिस, वाराणसी



बनारस आयुर्वेद सीरीज

४२

मुनिकुचिमारप्रणीत

कुचिमार तन्त्रम्

हिन्दी अनुवाद सहित

अनुवादक

डॉ० कृष्णकान्त पाठक

बी.एम.एस.

सम्पादन

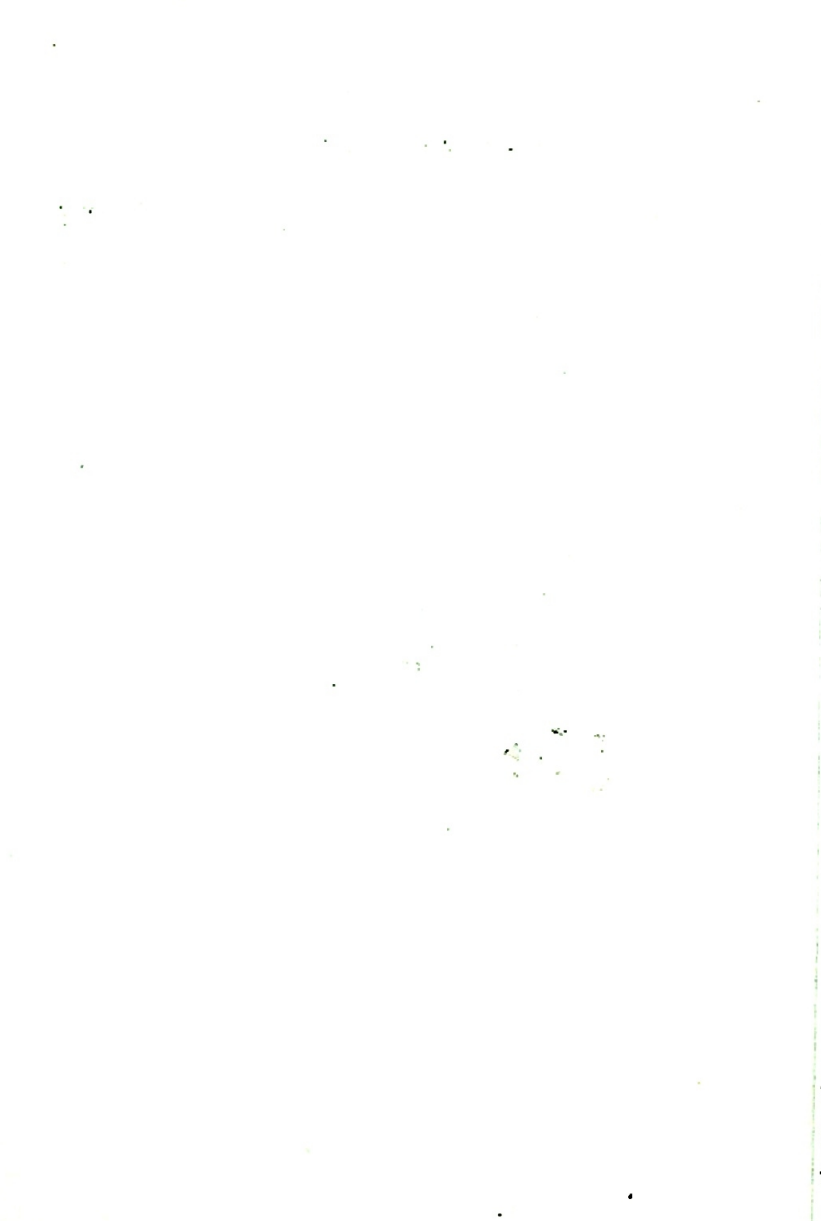
निष्कामेश्वर पाठक

पूर्व प्रोचार्य महावीर इण्टर मॉडिफाईट कालेज

मालिकपुरा, गाजीपुर



चौखम्बा संस्कृत सीरीज आफिस, वाराणसी



कुचिमार तन्त्रम्

मङ्गलाचरणम्

श्री शंकर नमस्कृत्य यत्पूर्वैः समुदाहृतम्।

हिताहितकरवृणां महौषधि समन्वितम्॥१॥

मैं भगवान शिव की वन्दना करता हूँ और सामर्थ्य सम्पन्न औषधियों पर आधारित, जो जन-सामान्य के लिए स्वीकार्य और अस्वीकार्य हैं, प्रस्तुत निबन्ध वर्णित करता हूँ॥१॥

वृंहणं लेपनं चैव वश्य बन्धन वृष्यकम्।

कन्या करं लोमकाण्यं बन्ध्या प्रसव चिन्तनम्॥२॥

पादलेपाञ्जनं तैलं रोमनाशनमेव च।

एवमादीनिकर्माणि श्रूयन्तां तत्प्रयत्नतः॥३॥

कृपया ! अवधानपूर्वक श्रवण करें—(इस निबन्ध का वर्ण्य है) कन्याकर औषधियाँ और तकनीक—जिनसे योनि कठोर या संकुचित अर्थात् कुमारी तुल्य हो जाती है। बालों में लगाए जाने वाले तल-केश रक्षक या औषधियाँ (लोम काण्यं), बन्ध्या बनाने वाली औषधियाँ, सुप्रसव कराने वाली औषधियाँ, पाँवों में बाह्य प्रयोग हेतु लेप और अवलेप (प्लास्टर), अञ्जन और रोमनाशक तैल आदि॥२-३॥

कमलदल तैल सैन्धव भल्लातक बीजमादहेदन्तः।

वृहतीफल कफ सहितं माहिषचमनः शिलावृद्धिकरम्॥४॥

कमल पत्र (Nelumbo nucifera), सैन्धव लवण (Rock-Salt), वृहती फल (Solanum indicum), कफ समुद्र फेन (Sepia officinalis bone) और महिषी घृत से तैयार तैल पुरुष जननाङ्ग को दीर्घकाय और सुपुष्ट बनाता है॥४॥

कारवल्ली फलं सर्ज-जलशूक समायुतम्।

वृहती फल तोयेन लेपः शिश्न विवृद्धये॥५॥

कारवल्ली फल (*Momordica charantia*) और छाल या सर्ज की गोंद (*Vateria indica*) जलशूक या शैवाल (*Ceratophyllum demersum*) वृहती फल तोय (*Solanum ineicum*) का अवलेप पुरुष जननाङ्ग को दीर्घकाय और सुपुष्ट बनाता है॥५॥

तिलसर्षपयोश्चूर्णं सप्तपर्णस्य भस्म च।

जलशूकं क्रमाल्लिम्पे ल्लिङ्गं स्यान्मुशलोपमम्॥६॥

तिल (*Sesamum indicum*), सर्षप सरसो (*Brasica Campes- tris*), सप्तपर्ण (*Alstonia Shcolaris*) भस्म और शैवाल भस्म जलशूक (*Ceratophyllum demersum*) के चूर्ण से बना लेप शिश्न को मूसलवत कठोर बना देता है॥६॥

भल्लातकानि हरिताशन भस्म रूढ

मम्भोजपत्र बृहती फल तोयमिश्रितम्।

उद्धर्तयेत् च शकृता महिषस्य लिङ्गं

स्थूलं दृढं भवति तन्मुशलोपमानम्॥७॥

भल्लातक (*Seeds of Semecarpus anacardium*), तूतिया भस्म, हरिताशन भस्म (*Bhasma of copper sulphate*), अम्भोजपत्र और वृहती फल रस भैंस के मल के साथ लेप करने से शिश्न मूसल सदृश कठोर और दीर्घकाय हो जाता है॥७॥

रोमांसं जलशूकं च माहिषं घृतमेवच।

एतेनोद्धर्तयेल्लिङ्गं स्तूली भवति शाश्वतम्॥८॥

रोमांस (मांसरोहिणी) (*Soymida febrifuga*), जलशूक (*Ceratophyllum demersum*) और भैंस के घी के साथ बने लेप के मालिश से शिश्न आजीवन के लिए बड़ा और पुष्ट हो जाता है॥८॥

निर्मलं लिङ्गमुद्धृत्य गोमयेन पुनः पुनः।

सित्तं जलेन शीतेन यावदिच्छति मानवः॥९॥

गोमय (गोबर) से बार-बार शिशन की मालिस करने और बार-बार शीतल जल सेक से जननाङ्ग में इच्छानुसार कठोरता और आनन्द प्राप्ति की क्षमता प्राप्त हो जाती है॥९॥

कारवेल्ल्यश्वगन्धाच जलशूकं च तत्समम्।

वृहतीफल तोयेन लिङ्गवृद्धिः प्रशस्यते॥१०॥

कारवेल्लक (Momordica charantia), अश्वगन्धा (Withania somnifera), जलशूक (Ceratophyllum demersum) और उनके बराबर, वृहती फल के स्वरस (Solanum indicum) का तैयार लेप प्रयोग करने से शिशन के आकार की वृद्धि हो जाती है॥१०॥

सर्षपं तगरं कुष्ठं तालेन वृहतीफलम्।

जलशूकाश्वगन्धाच समादायैक भागतः॥११॥

अजाक्षीरेण संपेष्य कुर्यादुद्धर्तनं पुनः।

कर्णलिङ्गस्तनानान्तु वृद्धिरेषां प्रशस्यते॥१२॥

कर्णपालि, स्तनों और शिशन की विवृद्धि और सम्यक् परिपुष्टता के लिए सर्षप (Brassica campestris), तगर (Valeriana wallichii), कुष्ठ (Saussurea lappa), ताल, वृहतीफल (Solanum indica), जलशूक शैवाल (Ceratophyllum demersum) और अश्वगन्धा (Withania somnifera) समभाग में लेकर, उसे पर्याप्त अजा दुग्ध के मिश्रण के साथ पीस कर लेप तैयार किया जाता है॥११-१२॥

अश्वगन्धा च कुष्ठं च मांसी शावर कन्दकम्।

एतदुद्धर्तितं शेफं स्तूली भवति शाश्वतम्॥१३॥

अश्वगन्धा (Withania), कुष्ठ (Saussurea lappa), मांसी (जटामांसी) (Nardostachys) शावर कन्द (वृहती कन्द) (Dioscoria

bulbifera) का जल की सहायता से बने लेप की मालिश से शिश्न के आकार की विवृद्धि सर्वदा के लिए हो जाती है॥१३॥

करवीरमपामार्गमश्वगन्धा च छत्रकम्।
लाङ्गल्यान्त शिखा चैवसुवीजंकुलिजस्य च॥१४॥
कर्णवाहु भगाश्चैव वामाक्षीणां कुचद्वयम्।
वर्धन्ते नात्र सन्देहः प्रघृष्योद्वर्तते पुनः॥१५॥

करवीर (Nerium indicum), अपामार्ग (Achiranthos), अश्वगन्धा (Withania somnifera) और छत्रक (इस नाम की वनस्पति भेल संहिता में उल्लिखित है, लेकिन इसकी पूर्णतः पहचान नहीं हो सकी है। कुछ लोगों के अनुसार कुरुरमुत्ते को भी 'छत्रक' नाम दिया जाता है। डल्हन द्वारा व्याख्यायित सुश्रुत संहिता में यह द्रोणपुष्पी तथा राज निघण्टु में शतपुष्पा के नाम से उल्लिखित है। इस सन्दर्भ में इसे कुरुरमुत्ता के रूप में ही स्वीकृत किया जाना चाहिए), लांगुली (Gloriosa superba), अन्तशिखा (सम्भवतः मयूर शिखा) (Adiantum caudatum), सुबीज कुलिज (कुलुथ) (Dolichos biflorus?) को जल के साथ पीसकर, तैयार लेप कर्णपालि, कंधा, शिश्न, बांयी आँख और स्तनों की आकृति और आकार की निःसन्देह विवृद्धि करता है॥१४-१५॥

अश्वगन्धामपामार्गवृहतीं श्वेत सर्षपम्।
कुष्ठ तगर चूर्णं च पिप्पलीमरिचानि च॥१६॥
एतानि समभागानि अजाक्षीरेण पेषयेत्।
वर्धते लेपनाल्लिङ्गं नारीणां च पयोधरम्॥१७॥

अश्वगन्धा (Withania), अपामार्ग (Achiranthus aspera), वृहती (Solanum indica), श्वेत सर्षप (White variety of mustard-Vrassica campestris), कुष्ठ (Sussuria lappa), तगर (Valeriana wallichii), पिप्पली (Piper longam), मरिच (Piper Nigrum) इन सबको समभाग में लेकर, बकरी के दूध की सहायता से पीस कर इन द्रव्यों से बना लेप बाह्य

रूप से प्रयुक्त करने से शिश्न के आकार और पुष्टता की अभिवृद्धि होती है॥१६-१७॥

अश्वगन्धा वचां कुष्ठं वृहतीं श्वेत सर्षपम्।
एतेन वर्धते लिङ्गं नारीणां च पयोधरौ॥१८॥

अश्वगन्धा (Withania), वच (Acorus calamus), कुष्ठ (Saussures lappa), वृहती (Solanum indica), श्वेत सर्षप (Brassica campestris) को जल में पीसकर बने लेप को बाह्य रूप से प्रयुक्त किये जाने पर लिङ्ग तथा स्त्री पयोधरों की अभिवृद्धि होती है॥१८॥

पत्रं प्रियङ्गु नागाहं स्यात्तृणं चाश्वगन्धियत्।
सञ्चूर्ण्य मधुतैलेन शालिधान्येन दापयेत्॥१९॥
चत्वारिंशद्दिनादूर्ध्व उद्धृत्य कतिचिदिनैः।
स्तनयोर्लेपनं कुर्यात् पश्चात् पीनस्तनी भवेत्॥२०॥

पत्र (तमाल) (Cinnamomum), प्रियंगु (Callicarpa macrophylla), नागाह (नागकेशर) (Mesua ferrea), स्यात्तृण (एक प्रकार की घास), अश्वगन्धा (Withania somnifera) का विचूर्ण, शहद, तिल तेल और शालि चूर्ण के मिश्रण में मिश्रित कर चालिस दिनों तक रखना चाहिए। उस लेप का बाह्य प्रयोग करने वाली स्त्री पीनस्तनी हो जाती है॥१९-२०॥

हस्त्यश्वमूत्रैः खरसम्भवेवतैलं तिलानां विपचेद्विधिज्ञः।
तस्याथलेपेन विलासिनीनां पीनस्तनी तज्जघनाधरं च॥२१॥

हाथी, घोड़े तथा गधे के मूत्र में उबाल कर प्रसंस्कृत किया गया औषधीय तेल के बाह्य प्रयोग से विलासिनियों के जघन, उसके आधार और स्तन सुपुष्ट हो जाते हैं॥२१॥

तिल सर्षपयोश्चूर्णं सप्तपर्णस्य भस्म च।
घृतयुक्सूर्य संतप्त लिङ्गं वृद्धिकरं भवेत्॥२२॥

तिल और सरसों के चूर्ण और सप्तपर्ण का भस्म (Alstonia scholaris) को घृत मिश्रित कर, सूर्य रश्मि में गरम कर तैयार किया गया

लेप का बाह्य प्रयोग शिश्न के आकार और दीर्घता की अभिवृद्धि करता है॥२२॥

माषपत्र सकर्पूरं नवीन मधुना सह।

एतेन लिंगं वृद्धिः स्यात् स्त्रीणां च महती रतिः॥२३॥

माषा पत्र (माषपर्णी) (Teramnus labialis), कर्पूर (Cinnamomum camphora) नवीन शहद से मिश्रित बना लेप शिश्न के आकार की विवृद्धि करता है, जिससे स्त्रियों में महती रति भावना उद्बुद्ध होती है॥२३॥

सर्षपं च तथा तैलं सार्द्धं च विपचेत्ततः।

वाजिगन्धा समासेव्यास्तन कर्णादि वर्धनम्॥२४॥

सर्षप चूर्ण (Brassica compestris) और वाजि गन्धा की जड़ का चूर्ण, तिल के तेल में पका कर प्रसंस्कृत तैल के बाह्य प्रयोग से कर्णपालि और स्तनों की अभिवृद्धि होती है॥२४॥

एरण्डं वाजिगन्धा च, वचा शावर मूलकम्।

घृतं क्षीरं वसा तैलं कर्णादीनि विवर्धयेत्॥२५॥

एरण्ड (Ricinus communis), अश्वगन्धा (Withania somnifera), वच (Acorus calamus) और शावर मूल को घी, दूध, वसा तथा तैल में प्रसंस्कृत स्नेह द्रव्य कर्णादि की अभिवृद्धि करता है॥२५॥

यष्टीमधुक चूर्णं तु क्षीरव्यामिश्रितं पुनः।

वृहती फल तोयेन लेपनं कुर्वतां स्त्रियः॥२६॥

यष्टि मधु (Glycyrrhiza glabra), विचूर्ण दुग्ध में मिश्रित कर, पीस कर, शुष्क कर, वृहती फल में मिलाकर लेप तैयार किया जाता है। इस लेप का प्रयोग स्तनों की आकार वृद्धि करता है॥२६॥

अश्वगन्धा वचा कुष्ठमांसी सर्षप संयुतम्।

एतदुद्धर्तनं श्रेष्ठं स्थूलं भवति शास्वतम्॥२७॥

अश्वगन्धा सुरावल्ली शूक सर्षपमेव च।

वृहती फल तोयेन लिङ्गं वृद्धिः प्रजायते॥२८॥

अश्वगन्धा (Withania somnifera), वच (Acorus calamus), कुष्ठ (Saussurea lappa) और मांसी (जटामांसी) (Nardostachis) के लेप का वाह्य प्रयोग शिश्न के आकार की शाश्वत अभिवृद्धि के लिए प्रयुक्त किया जाता है॥२७-२८॥

कुलिजं करवीरं च लाङ्गली चित्रकं तथा।
अपामार्गवाजीगन्धं तिल तैलेन चूर्णितम्॥२९॥
कर्णवर्द्धनमेतत् नारीणां च पयोधरौ।
वाहूनांवर्द्धनं कुर्यात् लिङ्गानां चापि वर्द्धनम्॥३०॥

कुलज (Alpinia galanga), करवीर (Nerium indicum), लांगली (Gloriosa superba), चित्रक (Plumbago zeylanica), अपामार्ग (Achiranthos aspera), वाजिगन्ध (Withania somnifera) को तिल के तेल में पीस कर लेप तैयार कर, वाह्य रूप से लेपन से कर्णपालि स्तन, बाँह और शिश्न के आकार और बलिष्ठता से अभिवृद्धि होती है॥२९-३०॥

तमाल पत्रं तगरमुश्चत्यस्यापि पञ्चकम्।
लेपेन शेफसोवृद्धिः स्तम्भनं चोष्ण वारिणा॥३१॥

तमाल पत्र (Leaves of Cinnamomum tamala), तगर (Valeriana wallichii), उश्चत्य का पञ्चाङ्ग उष्ण जल में पीसकर, वाह्य प्रयोग करने से शिश्न की अभिवृद्धि तथा स्तम्भन शक्ति का विवर्धन होता है॥३१॥

किमत्र चित्रं यदि वज्रवल्ली।
वचाश्वगन्धा जलशूक पर्णम्॥
हेमप्रकाशं वृहती फलं।
क्षणेन कुर्यान्मुशल प्रमाणम्॥३२॥

वज्रवल्ली (Cissus quadrangularis), वच (Acorus calamus), अश्वगन्धा (Withania somnifera), जलशूक शैवाल (Ceratophyllum demersum), वृहती का पका पीला फल (Solanum indica) को जल में

पीसकर तैयार लेप का बाह्य प्रयोग करने से कोई आश्चर्य नहीं कि शिश्न क्षण भर में मूसल के प्रमाण न हो जाए।

गोशृङ्ग मूल कनकस्य बीजं।

वचाश्वगन्धा जलशूकचूर्णम्॥

हेमाम्बु वर्ण बृहती फलंच!

क्षणेन कुर्यान्तु मूशल प्रमाणम्॥३३॥

गोशृङ्गमूल (इसके रसेन्द्र चूड़ामणि ६.२३ में उद्धृत किया गया है। यह दिव्य औषधि है। यह एक प्रकार का बल्ब है, जिसे काटने से शृङ्ग अंकुरणकारी द्रव्य निकलता है, इसमें रसबन्धन द्रव्य निहित होता है।), कनक बीज (धतूर बीज), वच (Acorus calamus), अश्वगन्ध (Withania somnifera), जल शूक (Cerato phyllem demersum), बृहती का पूर्ण पका सुनहला फल (Golden coloured ripen fruits of solanum indica) का जल में पीसकर, इस लेप का प्रयोग बाह्य शिश्न को मूशलवत सबल और दृढ़ बनाता है॥३३॥



अथ लेपनम्

कदम्ब वृक्ष पत्राणां सूक्ष्म चूर्णं तु कारयेत्।

मधुनासह संयुक्तं लेपे स्यादुभयोः सुखम्॥१॥

कदम्ब के पत्तों का सूक्ष्म चूर्ण कर लेना चाहिए (Anthocephalus कदम्ब)। उक्त चूर्ण को मधु के साथ शिश्न पर बाह्य लेप करने से, दम्पति को रमण में अत्यधिक सुख मिलता है।

लवणं पिप्पलीमूलम् मधुकं मधुसंयुतं।

कपित्थ रस संयुक्तं लेपस्यादुभयोः सुखम्॥२॥

सैन्धव लवण (Rock salt), पिप्पली मूल (Piper longam), मधुकम (Glycyrrhiza glabra) के विचूर्ण को शहद और कैथ (कपित्थ

Feronia limonia of Feronia elephanta) के रस में मिश्रित कर तैयार लेप के बाह्य प्रयोग करने से दम्पति को रमणकाल में अत्यधिक आनन्द प्राप्त होता है॥२॥

स्वयंगुप्तस्यरोमाणि सैन्धवं शर्करा मधु।
लेपमेतत्प्रशसन्ति दम्पयोः प्रीतिवर्द्धनम्॥३॥

स्वयं गुप्त के रोम (Mucuna prurita), सेंधा लवण, शर्करा, मधु को मिश्रित कर बने लेप के बाह्य प्रयोग से दम्पति को अत्यधिक सुख मिलता है और प्रीति बढ़ाने वाला होता है॥३॥

मधुना मधुकं चापियोषिदं जलकारिका।
कुष्ठेन सह संयुक्तः लेपो हृदयतापनः॥४॥

मधूक (Glycyrrhiza glabra), योषित् (योषिता प्रिया Curcuma longa), जल कारिका (Ceratophyllum demersum?), कुष्ठ (Saussurea lappa) को शहद के साथ मिश्रित कर और पीस कर लेप तैयार किया जाय। इसका बाह्य प्रयोग हृदय को तप्त करने वाला होता है॥४॥

वचापाठा मधूच्छिष्टं यदावकुचि कर्णिका।
वृश्चिकालि समायुक्तो लेपोऽयं मरणान्तिकः॥५॥

वच (Acorus calamus), पाठा (Cissampelos pareira), अवाकुची कर्णिका (समतुल्यकमल), वृश्चिकालि को विचूर्णित कर, मधूच्छिष्ट (मधुमक्खी का मोम) में मिश्रित कर बना लेप अवलेप (मरहम) आजीवन उद्दाम यौवन हेतु प्रयुक्त किया जाय॥५॥

यवा लोध्रमुशीरं च मञ्जिष्ठा गौर सर्षपम्।
क्षौद्रेण सह संयुक्तो लेपोऽयं मरणान्तिकः॥६॥

यव (Hordeum vulgare), लोध्र (Symplocos racemosa), उशीर (खस) (Vetiveria zizanioides), मञ्जिष्ठा (Rubia cardifolia), श्वेत सर्षप (Brassica campestris) को शहद के साथ मिश्रित कर तैयार लेप, आजीवन रमणकाल में उत्तमोत्तम आह्लाद प्रदान करता है॥६॥

ब्रह्मादण्डी मधुरसं पिप्पली मारिचानि च।
वैशिकानामयं लेपः कुलस्त्रीणां न दापयेत्॥७॥

ब्रह्मादण्डी (Tricholepis glaberrima), मधुरस (Marsdenia tenacissima), पिप्पली (Piper longam), मरिच (Piper nigrum) पीस कर बना पेष्ट केवल वेश्याओं के निमित्त है। इसका वाह्य प्रयोग करें लेकिन कुलवधू को इसका प्रयोग निषिद्ध है॥७॥

नोट—सम्भव है यह लेप बन्ध्यत्व उत्पन्न कर सकता है; क्योंकि यह अत्यधिक कामोन्मादकारी है और अत्यधिक सन्तुष्टिकारी है।

मधुना वृश्चिका लेपः कपि शेफस्तु सर्पिषा।
राजानुलेपना मानौ प्रध्युम्नेन प्रक्रीर्तितौ॥८॥

वृश्चिक (यह शब्द राजनिघण्टु ५.४० में तथा वृश्चिक पत्री के रूप में चरक चि० ९.४४ चक्रपाणि के वक्तव्य में। पी. वी. शर्मा के द्रव्यगुण कोश में इसका नाम (Tragia involucreta) प्रयुक्त है। इसका विचूर्ण शहद में मिलाकर, बने पेष्ट का प्रयोग किया जाता है। प्रयोग के समय निम्न मंत्र ध्वनित करना चाहिए—

नमस्त्रिशूलिने कर्णाय ठः ठः इति मन्त्रः

यह राजाओं के लिए लाभदायक है। अन्ततः कपि शिशन को घी के साथ पीसकर, प्रयुक्त किया जा सकता है॥८॥

मनुष्य दन्तं लवणं सैन्धवं माक्षिकं तथा।
मधुना सह संयुक्तो लेपोऽयं मरणान्तिकः॥९॥

मानव दाँत विचूर्ण, सैन्धव लवण (Rock salt), माक्षिक (स्वर्णमाक्षिक Copper pyrite) को शहद में मिश्रित कर, बने लेप का वाह्य प्रयोग उच्चतम आनन्द या आजीवन आनन्द प्रदान करता है। उक्त लेप निम्न मंत्र के १०८ बार उच्चारण करने के बाद ही करना चाहिए—

श्यामायाश्चायं मन्त्रः

अप्सराश्च विमानश्च ठःठः अष्टशतं परिजप्य प्रयुञ्जीत॥

पिप्पलीं तण्डुलं चैव पुष्पाणि क्षुरकस्य च।

वृहती फल संयुक्तो लेपोऽयं मरणान्तिकः॥१०॥

पिप्पली (Piper longum), तण्डुल (चावल), क्षुरक पुष्प (यह कोकिलाक्ष का पर्यायवाची है) (Astercantha longifolia) और वृहती फल (Solanum indica) को पीस कर, बने लेप के वाह्य प्रयोग से उच्चतम आनन्द या आजीवन आनन्द की प्राप्ति होती है॥१०॥

पिप्पलीं तण्डुल लोध्रं शृङ्गिवेरं तथा।

तगरोत्पलगन्धाश्च तथा वाल्मीकमृत्तिका॥११॥

अजन्यस्य कदम्बस्य पुष्पाणि च फलानि चः।

क्षौद्रेण सह संयुक्तो लेपोऽयं मरणान्तिकः॥१२॥

पिप्पली, तण्डुल (चावल), लोध्र (Symplocos racemosa), शृङ्गिवेर (Zingiber officinale), तगर (Valeriana wallichii), उत्पल (Nymphaea stellata) गन्ध (पी. वी. शर्मा के द्रव्यगुण कोश पर आधारित कल्याण के अनुसार गंध का अर्थ अश्वगन्धा है।) वाल्मीकि मृत्तिका (दीमकों द्वारा एकत्रित मिट्टि), पुष्प अजन्य और कदम्ब को मिश्रित कर शहद के साथ बने लेप का वाह्य प्रयोग जीवन को उत्तमोत्तम आनन्द प्रदान करता है।

॥ इति कुचिमार तन्त्रम् द्वितीय पटलः समाप्तः ॥

वशीकरण बन्धनम्

देवसत्त्वा तु या नारी सोमवर्णा सुरुषिणी।

प्राच्यं शिरसि दातव्यं याभकाले विशेषतः॥१॥

कृष्णा च मधुकं चैव कर्पूरं क्षौद्र नागरम्।

पाटली रसः संयुक्तं नारी हृदय वल्लभः॥२॥

देवसत्त्वा नारी (अलौकिक गुण सम्पन्न) सोमवर्ण की और सौन्दर्यान्वित होती है। उसे सलाह दी जाती है कि वह रमणकाल में उसका सिर पूर्वी दिशा में स्थित रखे, तब वह गहन रति की अनुभूति करती है, जनेन्द्रिय को कृष्णा (Piper longum), मधूक (Glycyrrhiza glabra), कर्पूर तथा नागर (Zingiber officinale) के विचूर्ण को पाटली के रस (Stereospermum suaveolens) तथा शहद से मिश्रित लेप से लिप्त करना चाहिये॥१-२॥

मुनिसत्त्वा तु नारी मातवृक्ष प्रभासिता।
उदीच्यां मूर्ध्नि दातव्यं यामकाले विशेषतः॥३॥
वार्ताकफल सारेण लवणस्य तु लेपनम्।
मूलेद्वयङ्गु मालिप्य शुष्के लिङ्गेयमेत्पुनः॥४॥

सन्त स्वभाव वाली नारी मातवृक्ष प्रभासित होती है। उन्हें सलाह दी जाती है कि रमणकाल में अपना सिर उत्तर दिशा में स्थित रखें। शिशन की जड़ से दो अंगुल मात्र वार्ताक फल (वार्ताकि—Solanum indica) और डल्हन के वक्तव्य के अनुसार “ वर्तल फल ‘बेगन’ इति लोके, बेगन— (Solanum melongena) रस तथा नमक (सैन्धव) मिश्रित लेप से लिप्त करे। सूखने पर रमण की सलाह दी जाती है। इस प्रकार ये स्त्रियाँ आकृष्ट होती हैं॥३॥

गन्धर्वसत्त्वा या नारी पश्चिमे शिरसि यभेत्।
क्षौद्रेण साञ्जनं पिष्ट्वा मत्स्य पित्तं चतुस्समम्।
आलिप्य मेढ्रं यभतां सुख स्यादुभयोस्तथा॥५॥

गन्धर्व प्रकृति की स्त्रियाँ रमणकाल में सिर पश्चिम दिशा की ओर स्थित करें। रमणकाल में दोनों अञ्जन पत्थर, (सुरमा पत्थर) चूर्ण, शहद तथा पित्त या मछली के पित्ताशय के रस से बने लेप को शिशन में लगाएँ, इससे अपूर्व आनन्द की प्राप्ति होती है॥५॥

राक्षसत्त्वा तु या नारी मत्स्य मांसप्रिया शुभा।
ऊर्ध्व केशीच रक्ताभा नैऋतं शिरसि यभेत्॥६॥

सुरामांस प्रिया रौद्रा मुदिकूर भाषिणि।

वराह मेदः क्षौद्राभ्यां कलेन्मूलं प्रलिप्यच॥७॥

राक्षस प्रकृति की स्त्रियाँ मछली तथा मांस को पसन्द करती हैं। अशुभ दर्शन वाली इन स्त्रियों के बालों का उर्ध्वभाग लालिमा का स्पर्श लिए होता है। मद्य, मांस प्रिया ये स्त्रियाँ आक्रामक तथा कटु-कूर भाषिणी होती हैं। उन्हें द्रवित करने के लिए, रमणकाल में इनका सिर नैऋत्य कोण (दक्षिण-पश्चिमी कोण) में स्थित करना चाहिए और शिशन की जड़ को सूअर की वसा और शहद के मिश्रण से लिप्त करना चाहिए॥६-७॥

भूतस्त्वा च या नारी ह्रस्वजङ्घा महोदरी।

भक्ष्यभोज्य प्रिया नित्यमीशान्यांशिरसा यभेत्।

अञ्जनं सैन्धवं पिष्ट्वा मधुना लिप्य मेहनम्॥च॥८॥

भूत-सत्त्व (प्रेत प्रकृति) वाली नारी की जाँघ पतली और पेट बड़ा होता है। वह विभिन्न स्वादिष्ट भोजनों की लोभी तथा प्रतिदिन रमण की अभिलाषी होती है। रमणकाल में उसका सिर पूर्वोत्तर कोण में स्थित होना चाहिए। उसके साथ रमण करते वक्त शिशन को सुरमा पत्थर चूर्ण तथा सैन्धव लवण को शहद से मिश्रित कर लिप्त कर लेना चाहिए॥८॥

नागसत्त्वा तु या नारी वायव्यां शिरसि यभेत्।

नारिकेल धवक्षीर शालिपिष्ट गुडप्रिया॥९॥

कर्णिकारस्य निर्यास कर्पूरं केतकीरजः।

केतकी पुष्परेणुं च क्षौद्रं चापि समाचरेत्।

सुसंदत्त्वा यभेतां तु प्राची शिरसि संस्थिताम्॥१०॥

नागकन्या की पसन्द नारियल धवक्षीर (Gum of Anogeissus latifolia), शालिपिष्ट (शालि चावल का चूर्ण) और गुड़ होते हैं। रमणकाल में उसका सिर पश्चिमोत्तर के कोण में होना चाहिए। उसके रमण के लिए शिशन को कर्णिकार के निर्यास या गोंद (कर्णिकार वी. पी. एन के अनुसार यह या तो पुष्प वर्ग का पादोत्पल है या आरग्वध का समानार्थी है (Cassia

fistula) कहीं यह देशी 'कनैल' तो नहीं?, कर्पूर तथा केतकी रज (Pollen of Pandanus odoratissimus flowers) के लेप से लिप्त किया जाना चाहिए। शहद और केतकी पुष्प रेणु के लेप को भी विकल्प के रूप में प्रयुक्त किया जाना चाहिए। रमणकाल में स्त्री का सिर पूर्वी दिशा में भी हो सकता है॥९-१०॥

यक्षसत्त्वातु या नारी निर्लज्जा श्याम कोमली।
मत्स्य मांस प्रिया नित्यं गन्ध पुष्पप्रिया भवेत्॥११॥
कर्पूर कुङ्कुमं कुष्ठं पिप्पली काम संयुतम्।
रोचना क्षौद्रलिप्ताङ्गी नैऋत्यां शिरसिभेत्।
आजन्म दास्यतांयाति सत्यमेतन्न संशयः॥१२॥

यक्ष सत्व वाली नारी निर्लज्ज, श्यामवर्णी सुकोमल और मत्स्य मांस प्रिया होती है। सुगन्धित पुष्पों की सुगन्ध उसे बहुत प्रिय होती है। रमणकाल में उसका सिर दक्षिण-पश्चिम कोण में स्थित रखकर, योनि में कर्पूर, कुमकुम (Crocus sativus), कुष्ठ (Saussures lappa), पिप्पली तथा गोरोचन और शहद का मिश्रित लेप प्रयुक्त किया जाना चाहिए॥११-१२॥

ॐ क्लीमेनामानय आनय वशतां ॐ ततो ब्रूयात्।
तदनुचक्ष्णम एतदयुतं जप्त्वांशदशांशतो जुहुयात्॥१३॥
किंशुक कदम्ब कुसुमैः रात्रावेतां चरेतपुरुश्चर्याम्।
आकर्षयति प्रमदां वश्यतिताविह्वली भूताम्॥१४॥

“ॐ क्लीमेनामानय आनय वशतां ॐ ततो ब्रूयात् तदनु चक्ष्णम” उपर्युक्त मंत्र को एक लाख बार जप कर और एक हजार किंशुक पुष्प (Butea monosperma) और कदम्ब (Antocephalus cadamba), प्रत्येक हवन के रूप में पुरश्चरण करें। उक्त मंत्र के पाठ के प्रभाव से प्रमदा (स्त्री विह्वल होकर आकृष्ट हो जाती है)॥१३-१४॥

ॐ ह्रीं नम इति लक्षं रात्रौ लक्षीकृतां पुरोध्यायन्।
जप्त्वा योनौ हृदये ललाटदेशे च तां तूर्णम्॥१५॥

द्रावयते चाकर्षयति वश्यति तेषां फलं क्रमतः।

ज्ञेयंसुधीभिरेतच्छत गुणः स्यात्स्मरः साक्षात्॥१६॥

“ॐ ह्रीं नम इति” मंत्र का रात्रि में आँखों के समक्ष योनि, हृदय और ललाट का ध्यान करते हुए, एक लाख जप करने से तीव्र आकर्षण उत्पन्न होता है। काम क्षेत्र के विशेषज्ञों का विश्वास है कि इस मंत्र के जप से प्रेमाग्नि गुनी अधिक सफलता प्राप्त होती है॥१५-१६॥

“ओं मद मद मादय-मादय हंसौ ह्रींरूपिणीं

स्वाहा” जप्त्वायुतं सहस्रं हुत्वा वशयेच्च कुसुमेन।

ॐकार पूर्वं मेतत्कुसुमान्यपि रक्त वर्णानि॥१७॥

“ॐ मद मद मादय मादय हंसौ ह्रीं रूपिणी स्वाहा” उपर्युक्त मंत्र एक लाख बार जप करने से और रात्र में एक हजार रक्त कुसुम का अग्नि हवन करने से प्रमदा को वशीभूत किया जा सकता है॥१७॥

“ओं हल्लेखे मणिद्रवेकामरूपिणीं स्वाहा”

लक्षं दशांश होमस्त्रिलैः कृतः सिद्धिमावहति॥१८॥

सूर्योदये तथास्ते जा पात्साध्वीम पीन्द्राणीम्।

वश्यति किमुलोकानां वनितास्तास्तुस्वयंयान्ति॥१९॥

“ॐ हल्लेखे मणिद्रवेकामरूपिणीं स्वाहा” प्रातः और सायं एक-एक लाखबार जप कर, दस हजार तिल के दानों का हवन किया जाय, इससे सिद्धि मिल जाती है। ऐसा होने पर साक्षात् साध्वी इन्द्राणी भी वशीभूत होती है, सामान्य का क्या कहना? वे तो स्वयं समीप में चली आएँगी॥१८-१९॥

“चामुण्डे हुलु हुलु चुलु चुलु वश्यमानयामुकीं।

स्वाहा” अभिमन्त्र्य सप्तवारं वश्यति ताम्बूलदानेन॥२०॥

“चामुण्डे हुलु हुलु चुलु चुलु वश्यमानयामुकी स्वाहा” उक्त मन्त्र का सात बार, एक पान-वीटिका लेकर किया जाय और उस वीटिका को दाँतों को खिला दिया जाय, तो वह वशीभूत हो जाती है॥२०॥

“चामुण्डे जय जम्भे मोहवयश मानयामुकीं स्वाहा”।

दद्यात्पुष्पाणि पठन् यस्यै सा तद्वशं याति॥२१॥

“चामुण्डे जय जम्भे मोहवयश मानयामुकीं स्वाहा” उक्त मंत्र पाठ करते हुए, जिसे पुष्प दिए जायें, वह वशीभूत हो जाती है॥२१॥

शवमाल्यं वातोत्थं ग्राह्यं पत्रादि वामहस्तेन।

अस्थि मयूर चकोरकयोरपि सर्वविचूर्ण्य यस्यपदे।

यस्याः शिरसि चविकिरे दद्भूत मेतद्वशी करणम्॥२२॥

वायु द्वारा उड़ाई गई शवमाला तथा पत्ते आदि, बाएँ हाथ से गृह्य कर, चकोर तथा मोर की अस्थियाँ पूरी तरह विचूर्णित कर, जिसके सिर पाँव पर बिखेर दिया जाय, तो वह वशीभूत हो जाती है। यह अवशीकरण मंत्र है॥२२॥

गन्धक मनःशिलाध्यां भूयः खण्डानि भावयेत्स्नुह्याः।

पिष्ट्वा विशोष्य चैवं मधु युक्तोऽयं ध्वजालेपः।

रमयन् वशयति कान्तां रक्तप्रभवा नरस्य विष्टायुक्।

यस्या शिरसिचविकिरेत् पृष्ठ तस्यैव सालगति॥२३॥

गन्धक, मनःशिला (Realgar) को पीसकर, उसमें स्नुही (Euphorbia nerifolia) के दूध की भावना देकर तत्पश्चात् शहद से मिश्रित कर, उस लेप शिश्न पर करने से या उसमें खून तथा मल मिश्रित कर, स्त्री के बालों में, रमणकाल में रखने से वह वशीभूत हो जाती है। यदि यह मिश्रण प्रोक्थ पर रख दिया जाय, तो वह आजीवन साथ नहीं छोड़ती॥२३॥

गज नाशिन नर हृदय जिह्वाद्ग्लिङ्ग नासिकामांसैः।

रात्रौ पुष्य सुयोगे शिवालये मानुज कपाले।

साधित मेतत्कज्जल मबलायाः स्याद्वशीकरणे।

भक्षण पान स्पर्शन विधिषुसुविज्ञस्समा युज्यात्॥२४॥

पुष्य नक्षत्र की रात्रि में किसी सुन्दर सुयोग में, किसी वन्यगज मारे गए मानव के हृदय, जीभ, शिश्न, आँखों और नाक का मांस ले

नसी शिवालय में, मानव कपाल में, उसका काजल साधित किया जाय। इस काजल के प्रयोग से स्त्री वशीभूत हो जाती है। इसका प्रयोग भक्षण, पान तथा दर्शन विधियों से भी करके स्त्री को वशीभूत करने में सफलता पायी जा सकती है॥२४॥

चटकोदरस्य मद्यान्निष्काश्यान्त्राणि तदुपरे वीर्यम्।
मूत्र चापि विदध्यात्सकोरकेसंपुटी कुर्यात्।
चुल्ह्यां सप्त दिनानि विपचे तद्भस्म संसिद्धम्।
पानेऽथ भक्षणे वा दत्तं त्वरितं वशं नयते॥२५॥

चटक पक्षी के उदर से उसकी आँतों को निकाल कर, उसमें वीर्य या मूत्र डाल कर, छेद बन्द कर, एक कसोरे में रख, दूसरे से बन्द कर, उसकी कपड़ मिट्टी कर, किसी चूल्हे में सात दिन तक रख कर भस्म बनाया जाय। तत्पश्चात् उक्त भस्म को एकत्र कर, प्रिया को ताम्बूल वीटिका में प्रयुक्त कराया जाय, तो वह निश्चित ही वशवर्तिनी हो जाती है॥२५॥

नन्दिकीटमथचूर्णयेद्बुधस्तत्रवीर्यं मपिपातयेन्निजम्।
गुञ्जिकामथविपिष्ययोजयेत्ते नतां वशमुपानयेद्ध्रुवम्।
भोजयेच्चयदिवापिपाययेत्मस्तकेऽथर्यादवापिपातयेत्।
अद्भुतेनविधिनानरः परांसोहयेदपिवशिष्ठ कामिनीम्॥२६॥

नन्दीकीट को विचूर्ण में अपना वीर्य मिलाकर, उसे गुंजा भर (५ तोली) अपनी प्रिया को उपभोग कराएँ, वह निश्चय ही वशीभूत हो जाती है। इस विचूर्ण को उसके भोजन में मिलाकर भी दिया जा सकता है या उसके कान पर छिड़क दिया जाय। इस विधि से, जब पवित्र अरुन्धती भी महर्षि विशिष्ठ की वशवर्तिनी हो सकती है, तो सामान्य स्त्रियों के सम्बन्ध में क्या कहना?॥२६॥

सहदेवी पद्मदलं पुनर्नवासारि संयुतम्।
साधित कल्कैः सिद्धं नयानांजनमद्भुतं वशकृत्॥२७॥

सहदेवी (Vernonia cineria), कमल पत्र, पुनर्नवा (Boerhaaviadi-

ffusa) और सारि के पौधे से साधित कल्क से सिद्ध नयनांजन अद्भुत रूप से वशीभूत करने वाला होता है॥२७॥

॥ इति कुचिमार तन्त्रेण तृतीयः पटलः समाप्तः ॥

अथ वाजीकरणम्

अथेदमभिधास्यामि वृष्यं विविध लक्षणम्।

अति व्यायाम सत्त्वानां स्वभाव क्षीणरेतसाम्॥१॥

जो लोग अत्यधिक व्यायाम और कठोर कामों में लिप्त रहे हैं, प्रकृति से कोमल हैं, किन्हीं दुर्घटनाओं या क्षति के कारण अल्पवीर्य हैं, उनके लिए, अब कामोद्दीपक औषधियों के विविध लक्षणों को अभिव्यक्त करूँगा॥१॥

प्रमादादतिरिक्तस्य हीन शुक्रस्य सर्वदा।

तन्निमित्तं भवेत्तस्माद्व्याद्वृष्यकरं स्वयम्॥२॥

स्यंगुप्तां तिलान्माषान्बदरी शालिपिष्टकम्।

अजाक्षीरेण संपेष्य घृते पूपलिकां पचेत्॥३॥

अङ्गुष्ठमात्रं तस्यास्तु भक्षयित्वा पयः पिवेत्।

न च पद्भ्यां स्पृशेद्भूर्मिवृद्धो विशति वेगवान्॥४॥

स्वयं गुप्त चूर्ण (Mucuna pruita), तिल, माष, बदरी या बेर गूठली और शालि चावल को बकरी के दूध में पीस कर, गाढ़ा पेस्ट बना लें हैं। उसकी एक अंगुल बराबर मोटी पूरी धी में पकाकर, दूध के साथ लेने लाभ होता है। उसके उपयोग करने वाले को सलाह दी जाती है कि वह पाँव न चले। उक्त दवा के प्रभाव से वृद्ध भी नवजवान हो जाता है॥२-४॥

इक्षुर गोक्षुरकस्य च मूलं।

वानर रोमफलं तिलमाषाः॥

चूर्ण मिदंपयसा सह लेह्यम्।

यस्य गृहे प्रमदा शतमस्ति॥५॥

इक्षुर या कोकिलाक्ष (Astercantha longifolia), गोक्षुर (Tribulus terrestris) की जड़, वानर रोमफल (Seeds of Mucuna prutita), तिल और माष (उर्द) के चूर्ण को मिश्रित कर लेह्य के रूप में निज्रमत कर लिया जाय। इसका प्रयोग करने से कोई भी एक सौ स्त्रियों के साथ रमण कर सकता है।

चूर्ण विदार्याः लवणं यवाः माषा स्तथैव च।

सर्पि वाराहमेदश्च तिला लोहित शालयः॥६॥

एतैः पूपलिकां कृत्वा भक्षयित्वा पयः पिबेत्।

सहस्रं याति कान्तानां सादरंप्रति वासरम्॥७॥

सैन्धव लवण, यव, माष, घी, सूअर की चर्बी, तिल, विदारी कन्द और लाल शालि को मिश्रित कर, पूरी तैयार कर, दूध के साथ प्रयोग करने से वह व्यक्ति एक हजार स्त्रियों के साथ रमण कर सकता है॥६-७॥

उच्चिटा मथ विदारिका मृतां। माष चूण स्रविलां स शर्करम्।

यो नरः पिबति दुग्ध मिश्रतम्। प्रतयहं व्रजति योषितां शतम्॥८॥

उच्चिट-डल्हन के अनुसार सू. चि. ३८-८४ उत्तमाङ्ग i.e. VIdephritis edutis), विदारी (Pueraria tuberosa), अमृता (Tinospora cordifolia), माष सुविला चूर्ण और शर्करा को दूध के साथ लिया जाय। इस रसायन के प्रभाव से व्यक्ति एक सौ स्त्रियों के साथ रमण कर सकता है॥८॥

माषपिप्पलिशालिनां यव गोधूममेव च।

सूक्ष्म चूर्ण कृतो लेहः घृते पूपलिकां पचेत्॥९॥

भक्षयित्वा पयः पीत्वा शर्करा मधु शर्करम्।

शतश्च एक त्रिंशद्नक्तवारात्रिरन्तरम्॥१०॥

माष, पिप्पली (Piper longam), शलि चावल, यव, गूधम के

चूर्ण का लेह्य बनाकर, घी में पकाकर पूरी बनाएँ। उसे खाकर शहद-चीनी मिश्रित दूध को पीना चाहिए। ऐसा पुरुष १३१ स्त्रियों के साथ रमण कर सकता है॥९-१०॥

विदारि यवकं शालि स्वयंगुप्त फलानि च।
यवाश्च सह गोधूमाः पिष्ट्वा क्षीरे विमिश्रयेत्॥११॥
शीतं मधुघृताक्तां तु भुक्त्वा भवति वीर्यवान्।
भुक्तोपरि यदा जीर्णो तदा भवती मैथुनम्॥१२॥

विदारीकन्द (Pueraria tuberosa), यवाक (शालिधान्य का एक भेद) शालि, स्वयं गुप्त के बीज (Mucuna prurita), यव, गोधूम (गेहूँ) के चूर्ण को दूध में मिलाकर, उबाल कर शीतल होने पर, शहद और घी मिला कर, खाया जाय, तो क्षमता की अभिवृद्धि हो जाती है और कामानन्द की प्राप्ति होती है॥११-१२॥

वस्तेन्द्री सिद्ध पयसि भावितानसकृत्तिलान्।
यः खादत्यसितान् गच्छेत्तस्य स्त्रीणांशतं सदा॥१३॥

दूध में अज (बकरे) की जननेन्द्रिय को उबालते हैं, उससे तिल के दानों को भावित करते हैं। उक्त दानों का औषधि के रूप में उपयोग करने से, पुरुष १०० स्त्रियों का उपभोग कर सकता है॥१३॥

वृषण क्षीरसर्पियभ्यां पक्वमांसन्तु भक्षयेत्।
मधुमांसरसं पीत्वा शतवेगं स गच्छति॥१४॥

बकरे के अण्डाशय को घी तथा दूध में भावित कर, पके मांस के साथ-साथ ही मांस रस तथा मधु लेने से शत स्त्रियों के साथ रमण कर सकता है॥१४॥

वस्तान्ध सिद्धक्षीरेतु भाविता नसकृत्तिलान्।
अध्याच्च पयसा चूर्णमबला शतवल्लभः॥१५॥

बकरे के अण्ड को दूध में भावित अर्थात् उबालें तब तक, जब तक

उसका तत्त्व दूध में समाहित न हो जाय। इस प्रसंस्कृत दूध से तिल के बीजों को भावित किया जाय। इन दानों को सुखा कर, इसका चूर्ण बना कर, ग्रहण किया जाय। इस चूर्ण का दूध के साथ सेवन करने से, सौ स्त्रियों के साथ रमण कर सकता है॥१५॥

कृष्णा सैन्धवं संयुक्तं वस्तान्ध घृत संयुतम्।

भक्षयित्वा पयः पीत्वा पूर्वोक्तं मधुना सह॥१६॥

कृष्णा (काली मरिच Piper longum), सैन्धव लवण और बकरे के अण्ड को घी में प्रसंस्कृत करें, उक्त घी को दूध तथा शहद के साथ सेवन करने से कोई भी व्यक्ति सौ स्त्रियों के साथ रमण करने के योग्य बन सकता है॥१६॥

अश्वगन्धस्य मूलानि गवांक्षीरेण नित्यशः।

पीत्वा च सम्यगेतन्तु वृद्धो षोडश वेगवान्॥१७॥

अश्वगन्धा (Withania somnifera) मूल का चूर्ण, गाय के दूध के साथ नियमित लेने से वृद्ध भी १६ वर्ष के युवक के तुल्य वासना का आनन्द लेने में समर्थ हो जाता है॥१७॥

आमलक्या विदार्याश्चचूर्णं स्वरस भाविताम्।

शर्करा क्षीर सर्पिभ्यां प्राश्य सुक्षीर माचरेत्॥१८॥

आमलकी चूर्ण और विदारीकन्द चूर्ण, दोनों को उनके स्वरस में क्रमशः भावित कर, उक्तचूर्ण में घी दूध तथा शक्कर मिश्रित कर, खाने से नवयौवन की प्राप्ति होती है॥१८॥

स्वयंगुप्तस्य बीजानि तथा गोक्षर कस्य च।

चूर्णद्वयं पिबेत्सार्द्धं पयसा शर्करान्वितम्॥१९॥

स्वयंगुप्त के बीजों को (Mucuna prurita) तथा गोखुर (Tribulus terrestris) के चूर्ण शर्करा युक्त दूध के साथ लेने से यह वाजीकरण का कार्य करता है॥१९॥

आमलक्या रसे चूर्णं माषानां प्रक्षिपेन्नरः।

अतीते सप्तरात्रे तु शर्करा मधु संयुतम्॥२०॥

उर्द का चूर्ण आँवले के रस में सात दिन तक भिंगोया जाय, सात दिन बाद उसे शहद के साथ लिया जाय। यह वाजीकरण का कार्य करता है॥२०॥

विदार्या शूर्णमसकृत्स्परसेनैव भावितम्।

स्वगुप्त माषसंयुक्तं घृते पूपलिकां पचेत्॥२१॥

विदारीकन्द को उसी के रस में भावित कर, पश्चात् में उसमें स्वयंगुप्त का चूर्ण तथा माष चूर्ण मिलाकर, इस मिश्रण को घी में पकाकर इसकी पूरी बनाकर खाया जाय। इसमें पुंसत्व की अभिवृद्धि होती है॥२१॥

माष चूर्ण पलं चैव मधुना सह सर्पिषा।

अनुपानं पयः पीत्वा वृद्धः षोडशगोभवेत्॥२२॥

एक पल (४८ ग्राम या चार तोला) माष का चूर्ण, शहद और घी के अनुपान के साथ लेने से तत्पश्चात् दूध पीने से एक वृद्ध व्यक्ति भी किशोर के समान काम का आनन्द ले सकता है॥२२॥

मधुना सर्पिषा युक्तं मधुकं सकले समम्।

लीढ्वा निपीय तत्पश्चात् पयः पीत्वा शतं व्रजेत्॥२३॥

मधूक का चूर्ण और कले (कला-झाड़ी सरसों *Sisymbrium irio* कलि-विभीतक) का चूर्ण मिश्रित कर, घी तथा शहद मिलाकर तैयार लेह्य के दूध के अनुपान के साथ पीने से, कोई व्यक्ति सौ स्त्रियों साथ रमण कर सकता है॥२३॥

स्वर्णमाक्षिक लोह च पारदश्च शिलाजतुः।

पथ्या विडङ्ग धतूर विजया जातिपत्रिकाः॥२४॥

अश्वगन्धा गोक्षुराणामर्कैर् भाव्यं पृथक् पृथक्।

सप्तधत्तं तु वल्लैकमध्वाज्याभ्यां लिहेत् च॥२५॥

स्वर्णमाक्षिक भस्म (Copper pyrite), लोहभस्म, पारद, शिलाजतु (Bitumen), पथ्य (Terminalia chebula), विडंग (Emblia ribes), धतुर, विजया, जाति पत्रिका (Myristica fragrans) को मिश्रित कर तथा गोक्षुर और अर्क (Calotropis procera) के रस में अलग-अलग भावित कर तैयार रसायन बाजीकर हैं, इसकी मात्रा दो रती (२५० मि.ग्रा.) प्रतिदिन है। इसका सेवन सात दिन करना होता है॥२४-२५॥

वस्ताण्ड साधिते दुग्धे तिलान्कृष्णान्विभावयेत्।
शतावरं भावनास्यात् शतसंख्याः ब्रजेत् स्त्रियाः॥२६॥
अनुपानं सिता दुग्धं केवलैव सिताथवा।
स्तम्भनं वृष्यकं चैतत्सुखं सन्तान कारकम्॥२७॥

बकरे के अण्ड को दूध में उबाल कर, इस प्रसंस्कृत दूध तथा शतावर से तिल के दानों को भावित कर, उक्त द्रव्य को खण्ड मिश्रित कर दूध के साथ लेने से या इन तिल के दानों को शक्कर के साथ लेने से, यह वाजीकर होता है। इस एक रसायन में स्तम्भन, वृष्यक तथा सन्तानोत्पत्तिकारक गुण होते हैं॥२७॥

विदारिका गोक्षुरसं सिताज्यं मधु संयुतम्।
लीढ्वा हनपीय दुग्धं च नारीणां शतमावहेत्॥२८॥

विदारीकन्द का स्वरस, घी, शहद-शक्कर और गोक्षुर के रस को (Tribulus Terrestris) मिश्रित कर, इस द्रव्य को दूध के साथ लिया जाता है। यह सौ स्त्रियों के उपभोग की क्षमता उत्पन्न करता है॥२८॥

स्वरसेन धात्री चूर्णं बहुवारं विभावयेत्।
सिताज्यं मधु संयुक्तं पयः पीत्वा शतं ब्रजेत्॥२९॥
इदं महार्थं स्त्रैणानां विहारार्थं मुदाहृतम्।
नराणां मल्प शुक्राणां खिन्नानांच प्रजार्थिनाम्॥३०॥

धात्री (आमलकी Phyllanthus emblica) चूर्ण को उसकी के रस में कई बार भावना दी जाय। उसे शर्करा तथा शहद के मिश्रण के साथ प्रयोग

किया जाता है, अनुपान के रूप में दूध लिया जाय। यह खिन्न और तनावग्रस्त, थके हारे लोगों तथा पुत्रहीनों की पुत्राकांक्षा को पूर्ण करता है॥२९-३०॥

॥ इति कुचिमार तन्त्रे चतुर्थः पटलः समाप्तः ॥

अथ द्रावणम्

कर्पूरं टङ्कणं चापि भवबीज समन्वितम्।
मधुना लिङ्गं लेपोऽयं तरुणीं द्रावयेत्तदुत्तम्॥१॥

कर्पूर, टंकण (Borax), भावबीज (पारद) को शहद में घोंट कर, उसे पेस्ट के रूप में शिश्न में लिप्त करते हैं, इस वाह्य के प्रभाव से स्त्री साथी शीघ्र द्रवित हो जाता है॥१॥

केवलं टङ्कणं चापि नारी द्रावणमद्भुतम्।
चिञ्चा मधु समायुक्ता गुड युक्ताऽथवात्रयम्॥२॥

केवल टंकण का लेप ही अकेले, स्त्री को द्रावित करने में सक्षम है अथवा चिञ्चा (Tamarindus indica) में शहद और गुडद्य मिश्रित कर शिश्न पर लेप, स्त्री साथी को तत्काल उत्कर्ष पर ले आता है। यह भी अत्यन्त आनन्दकारी है॥२॥

पिप्पली मधु धतूरं लोध्रं मरिचमेव च।
रजसो द्रावणे योगो नारी गर्भं विनाशकः॥३॥

पिप्पली (Piper longum) का चूर्ण, मधु, धतुर, लोध्र (Symplocos racemosa), मरिच का चूर्ण मासिक स्राव कराने तथा गर्भ का विनाश करने में सक्षम है॥३॥

रक्तानर लिङ्गं च पारदं क्षौद्र मेव च।
लेपोऽयं कामिनीनां च सौख्यं प्रीतिकरः परः॥४॥

लाल बन्दर का लिङ्ग को पारद के साथ पीस कर, इस पेष्ट को

शिशन पर लेप लगाने से, स्त्री सहयोगी को अति आनन्द की अनुभूति होती है॥४॥

सैन्धवं मधु संयुक्तं पारावत मलान्वितम्।
रजसो द्रावणो योगो मुनिभिः परिकीर्तितः॥५॥

सन्त कहते हैं कि सेंधा नमक, मधु तथा पारावत (कबूतर) के मेल को मिश्रित कर, उपलब्ध मिश्रण मासिक स्त्राव को प्रेरित करता है॥५॥

अथ स्तम्भनम्

पद्मकिंजल्क संयुक्तां घृतक्षौद्र समन्विताम्।
सहदेवीं च संपेष्य नाभोधृत्वा शतं ब्रजेत्॥६॥

पद्मकिंजलक, घी शहद और सहदेवी (*Veronia ceneria*) को पीस कर, पेष्ट को नाभि बाह्य लेप से लगाना चाहिए, यह शिशन को इस सीमा तक दृढ़ बनता है कि वह सौ स्त्रियों को रमण करने में सक्षम है॥६॥

सित शरपुङ्खा मूलं वटपयसां पिष्ट मानने निहितम्।
एक करंजक बीजाऽभ्यंतरगंस्तम्भयेद्वीजम्॥७॥

श्वेत शरपुंखामूल (*Roots of Tephrosia purpurea*) को वट पायस के दूध के साथ पीसकर, इस लेप को करंज फल की खोल (*Pongamia pinnata*) जिसमें से बीज निकाल दिया गया हो, में भरकर, इसे मुँह में रखने से स्तम्भन शक्ति प्राप्त होती है॥७॥

सित शरपुङ्खा मूलं पारदरस सहित मानने निहितम्।
एक करंजक बीजान्तस्थं बीजं विधारयेत्॥८॥

श्वेतशरपुंखामूल और पारद को एक साथ पीस कर करज फल के एकाकी खोल में भरकर, उक्त करंज फल (*Pongamia pinnata*) को मुख में रखने से स्तम्भन की प्राप्ति होती है॥८॥

नरदक्षिण हस्तोत्थैरिभ शुण्ड समुद्भवैः।
करभाश्च पुच्छ सज्जात रोमिभिः कोल दंष्ट्रकम्।
ग्रथित्वा धारयेत् हस्ते क्षणं वीर्यं नमुञ्चति॥९॥

आदमी के दाहिने हाथ, हाथी के शुण्ड, युवा हाथी के पूँछ, घोड़े की पूँछ के बाल और सूअर के दाँत को एक साथ बाँधकर इस मीलित द्रव्य पोटली को धारण करने से सद्यः वीर्यपात नहीं हो पाता॥९॥

सप्तपर्णस्य बीजंवा मुखे घृत्वा यथासुखम्।

रममाणे रेतसश्च स्तम्भं धत्ते घटोद्वयम्॥१०॥

सप्तपर्ण के बीज को मुख में धारण करने से दो घंटे तक स्तम्भन प्राप्त होता है॥१०॥

स्नुही दुग्धे तथा छागी दुग्धे लज्जालु मूलकम्।

विमर्ध्य पादे विलिपेत् वीर्यच्यावं जयेदसौ॥११॥

स्नुही के दूध तथा बकरी के दूध में लज्जातु की जड़ (Mimosa pudica) पाँवों के तलवे में बाह्य रूप से लेप लगाने से स्तम्भन उत्पन्न होता है॥११॥

अथवा वारुणी मूलं पेषयेदजमूत्र के।

द्वजा लेपेन सम्मुञ्चत् वीर्यस्तम्भं जयेदसौ॥१२॥

वरुण (Crataeva religiosa) की जड़ को बकरी के मूत्र में पीसकर, इस पेष्ट को बाह्य रूप से शिशन में लेप करने से, शिशन में लेप करने से, वह व्यक्ति वीर्य-स्तम्भ पर विजय प्राप्त करता है। अर्थात् दृढ़ स्तम्भन पर विजय प्राप्त करता है॥१२॥

तैलं पुनर्नवा चूर्णं सिद्धं कौसुम्भमेवच।

ध्वजां वा चरणं वापि मर्दयन्न क्षणं च्यवेत्॥१३॥

पुनर्नवा चूर्ण से सिद्ध किया गये तिल के तेल और कुसुम्भ (Carthamus tinctorius) चूर्ण से सिद्ध तिल तेल को शिशन या तलुओं पर बाह्य मर्दन करने से अत्यधिक स्तम्भन शक्ति उत्पन्न होती है॥१३॥

सहदेवी मधु तिल माहिषी घृतसंयुतम्।

सित पङ्कज किंजल्कं चटकांडेन मर्दयेत्॥१४॥

नाभिलेपनतो वापपद लेपादथापिवा।

रममाणः शतं नारी वीर्य धत्ते नरश्चिरम्॥१५॥

सहदेवी (Vernonia cinerea) शहद, तिल तेल, महिषी घृत, सित पंकज या कुमुद (Nymphaea stellata) के पराग कण चटकांड को एक साथ पीस कर, इस लेप को बाह्य रूप से नाभि या दोनों तलवों में लगाने से अर्थात् इस उपक्रम से एक व्यक्ति सैंकड़ों स्त्रियों के साथ रमण करने में सक्षम होता है और देर तक स्तम्भन शक्ति प्राप्त कर लेता है॥१४-१५॥

॥ इत कुचिमार तन्त्रे पञ्चम पटलः समाप्तः॥

अथ कन्याकरणम्

मधुमनश्शिला वापि श्वेतानि मरिचानिच।

कुष्ठ मत्स्यस्य पित्तं च तथा सौराष्ट्र लोचनम्॥१॥

कोकिलस्य च बीजानि कपित्थं मूल मेवच।

घृतेन योनि मालिम्पेत् कन्या करण मुत्तमम्॥२॥

मधु, मनःशिला (Realgar), श्वेत मरिच, (मरिच के ऊपरी छिलके को हटाकर, शुष्क मरिच के अन्तः भाग को श्वेत मरिच कहते हैं।) कुष्ठ, मत्स्य पित्त (मछली का पित्त या पित्ताशय) सौराष्ट्र लोचन (Gum of Boswellia serrata), कोकिलाक्ष के बीज (Astercantha longifolia) कपित्थ मूल (Feronia limonia) को समभाग में विचूर्णित कर, घी के साथ लेप तैयार कर, योनि मार्ग में बाह्य रूप से लिप्त करते हैं। यह प्रक्रिया, कन्याकरण को सम्पन्न करती है। (कन्याकरण-योनिमार्ग को संकुचित करना)॥१-२॥

गोशृङ्गमजशृङ्गं च मनोह्रा च समन्वितम्।

हरिद्रेण जले लिप्त भर्तृतृप्तिकरं भवेत्॥३॥

गाय का शृंग, अजाशृंग और मनोछा (Red Arsenic) को हल्दी के

जल में पीसकर, तैयार लेप योनि में बाह्य प्रयोग से करने से और रमण क्रिया करने पर पुरुष साथी को सन्तुष्टि और आह्लाद प्राप्त होता है॥३॥

लोध्र कुमुद कन्दं च कोकिला हेम माक्षिकम्।

वर्तिवत् लपेयेध्योनौ सुगन्धिः कन्यका भवेत्॥४॥

लोध्र (Symlocos racemosa), कुमुदकन्द (Phizomatous portion of nymphaea stesseta), कोकिला (Astercantha longifolia), हेममाक्षिक (Copper pyrites) को पीसकर, बत्ती के समान बनाकर, योनि में प्रविष्ट किया जाता है। यह स्त्रकी को कुमारी तुल्य बना देते हैं। अर्थात् योनि में संकुचित होने की क्रिया सम्पन्न होती है। यह सुगन्धिकारक भी होता है॥४॥

लोध्र कार्पास पत्रं च बरी बीजमेवच।

हरिद्रे मधुना लिप्य कन्या भवति नित्यशः॥५॥

लोध्र, कपास पत्र और बेर के बीज (Ziziphus maurtiana) हरिद्रा (Curcuma longa), दाम हरिद्रा (Berberis aristata) को पीस कर उस चूर्ण को मधु में मिलाकर, इस लेप को भग में लेप लगाने से योनि में कठोरता आ जाती है॥५॥

कृष्ण निर्गुण्डि पुष्पाणामम्बु तैलेन बुद्धिमान्।

श्वेतलाक्षा रसं ग्राह्यं चतुः प्रस्थ सुशोभितम्॥६॥

क्वाथयेन्मतिमान् सम्यक्प्रस्थनिर्गुण्डि सम्भवम्।

चतुर्भागावशिष्टं तु कषाय परिमाणतः॥७॥

समशोष्य तिलान् कृष्णान् भावयित्वा तु तद्रसम्।

प्रतिगृह्य तिला भक्ष्या त्रिदिनेनैव भक्षयेत्॥८॥

निर्गुण्डी के काले फूल, तिलतेल, सफेद लाख ४ प्रस्थ की मात्रा लेकर (प्रस्थ ४ × ६४ तोला); इसे उबाल कर एक चौथाई शेष रहने पर अवशिष्ट निर्गुण्डी रस को तिल के दानों को भावित करने के रूप में प्रयुक्त किया जाता है। इस तिल को सुखा कर, उसे तीन दिन मात्र खाने से योनि संकुचन की क्रिया सम्पन्न होती है॥६-७॥

कपिला घृत समं तैलपूर्वोक्तेनैव भावितम्।
योनि मध्ये च दातव्यं सममेक तिली कृतम्।
कन्या करण मत्यन्तं योनि शौच मनामयम्॥१९॥

कपिला गाय का घी और तिल तेल सममात्रा में लेकर तिल तेल को
में भावित करें। इस मिश्रण का योनि में प्रयोग करने से, उसमें सकुचन की
क्या सम्पन्न होती है तथा योनि रोगों से मुक्ति भी मिलती है॥१९॥

रसोभूपीलु मूलञ्च पिप्पली तण्डुलं तथा।
एवं लेपः प्रयोक्तव्यो नारीणां चित्त हारकः॥१०॥

पीलू की जड़ का रस, पिप्पली और चावल को पीस कर पेष्ट तैयार
रते हैं। इसका योनि में बाह्य प्रयोग स्त्रियों के लिए हृदयहारी और आनन्ददायक
ता है॥१०॥

पित्तंतु काकविष्ठाच श्वानशेफ स्तथैवच।
स्वयं गुप्तफलं चैव मूलकं तरुतस्त्वचः॥११॥
त्रिफलां नागरं चैव लोध्रं च समभागशः।
किञ्चित्कटुक रोहिण्या मधुनासह योजयेत्॥१२॥

कौए का पित्त या पित्ताशय, कौए का मल, कुत्ते का शिशन,
व्यंगुप्त का फल या बीज, मूलक (*Raphanus sativus*) तरुत्वच् (*Bark*
Cinnamomum zeylanicum), त्रिफला, नागर (*Zingiber officinale*)
और लोध को समभाग में लेकर, थोड़ी मात्रा में कटुक रोहिणी (*Picrorhiza*
marroa) और शहद मिलाकर पीसते हैं। योनि में इस पेष्ट का प्रयोग संकुचन
न्त्र करता है॥

नागरस्य च कपोत पुरीष। कुष्ठ मंजन वचा हरितालम्॥१३॥
लेपयेच्च मधु सैन्धव युक्तम्। शोषये दिति गतावपि रम्भाम्॥१४॥

नागर (*Zingiber officinale*), कपोत पुरीष (मल), कुष्ठ अंजन
मा पत्थर), वच, हरिताल (*Yellow arsenic*) को शहद और सैन्धव

नमक के साथ पीसा जाता है। इसका वाह्य प्रयोग योनि को संकुचित व सुन बनाता है॥१३-१४॥

॥ इत कुचिमार तन्त्रे षष्ठः पटलः समाप्तः॥

अथ वन्ध्याकरणम्

सैहुंड दुग्धमादाय भाल देशे विलेपयेत्।
 अपूर्ण मथवा पूर्ण क्षणाद् गर्भ विमुञ्चति॥१॥
 नक्लेशो नापि संदेहो न रोगादि भयं क्वचित्।
 नवा प्रसव दुःखादि नवा हानि विधायकम्॥२॥
 गृहस्थानां सुखकरो योगोऽयमति दुर्लभः।
 कुचिमारेण मुनिना कृपया परिकीर्तितः॥३॥

सैहुंड के दूध को स्त्री के भाल पर, वाह्य प्रयोग, पूर्ण गर्भ अल्पकालीन गर्भ को तत्काल गिरा देता है। यह प्रक्रिया न तो दर्दपूर्ण है न संदिग्ध। इसका प्रयोग करने किसी अन्य रोग के उत्पन्न होने की सम्भाव नहीं है। यह प्रक्रिया दर्द रहित है। सन्त कुचिमार ने यह चिकित्सकीय प्रक्रिया प्रदान की है। यह घर वालों के लिए आनन्दप्रदायक और अत्यन्त दुर्लभ है॥१-३॥

कटुतुम्बी बीजयुतां नीरेण सहपेषयेत्।
 योनौ प्रलेप मात्रेण क्षणाद् गर्भ विमुञ्चति॥४॥

कटुतुम्बी (*Lagenaria siceraria*) बीज सहित लेकर, जल में पीस कर पेष्ट बनाया जय। इस पेष्ट का वाह्य प्रयोग, तत्काल गर्भपात करा है॥४॥

वातुकस्य च बीजानि कर्षमात्र प्रमाणतः।
 गृहीत्वा सेटकार्द्धेन जलेन सह संपचेत्॥
 अर्द्धाव शेषे तु पिबेद्गर्भपातो भवेद्ध्रुवम्॥५॥

वटुक के बीज (Benincasa hispida) एक कर्ष (१२ ग्राम) मात्रा लेकर, एक लीटर पानी में उबाल कर, आधा शेष रहने पर इसे छान कर, देने से निश्चित रूप से गर्भपात होता है॥५॥

आरण्यक कपोतस्य विष्टा गृञ्जन बीजकम्।

योनौ तद्धूम दानेन गर्भपातो भवेद्ध्रुवम्॥६॥

जंगली कबूतर का मल, गृञ्जन का बीज दोनों को मिलाकर इस मालापा जाप और योनि से धुँए का समावेश होते ही गर्भपात हो जाता है॥६॥

उष्ट्रकण्टक मूलंतु उदरे परिलेपयेत्।

घोटकस्य च विष्टाया धूमाद्गर्भ विमुञ्चति॥७॥

उष्ट्र कण्टक की जड़ (Echinops echinatus) को पीस कर, लेप को पेट पर लगाने से, तत्पश्चात् योनि से घोड़े की लीद का धुआँ लेने से निश्चित ही गर्भपात हो जाता है॥७॥

कर्ष मात्रं समादाय सोरं कलम संज्ञकम्।

भक्षयेत्पयसा सार्द्धं गर्भपातो भवेद्ध्रुवम्॥८॥

एक कर्ष या १२ ग्राम मात्रा में कलमी सोरा (Potasiumnitrate) दूध के साथ लेने से तत्काल गर्भपात हो जाता है॥८॥

सेहुण्डक समादाय छाया शुष्कन्तु कारयेत्।

प्रदाह्य वह्निा तच्च कर्षमात्रं च नित्यशः॥९॥

एक विंशत्यहान्ये तद्भक्षयेन्मधुना सह।

आजन्म वन्ध्या भवति रोग क्लेश विवर्जिता॥१०॥

सेहुंड (Euphorbia nerifolia) के तने को छाया में सुखाकर, इसे मालाकर राख कर लिया जाय। इसे शहद के साथ १२ ग्राम मात्रा में २१ दिन तक लेने से, वन्धत्व आजीवन के लिए हो जाता है, इसका विपरीत प्रभाव भी नहीं पड़ता॥९-१०॥

हस्ति विष्टा जलं ग्राह्यं कर्षमात्रं प्रमाणतः।

दिनानि सप्त मधुना पिवेद्वन्ध्यात्व सिद्ध्ये॥११॥

हाथी के मल का रस एक कर्ष भाग (बारह ग्राम) शहद के साथ मिलाकर सात दिन अनुपान करने से वन्ध्यापन हो जाता है॥११॥

हरिद्र ग्रन्थि मेकैकं प्रत्यहं भक्षयेद्यदि।

रजोधर्म समायुक्ता वन्ध्या षड्भिर्दिनैर्भवेत्॥१२॥

दिनत्रयं रजोधर्मे त्रिदिनं च ततः परम्।

एयं षट्सु दिनेष्वेत दध्याद्वन्ध्यत्व सिद्ध्ये॥१३॥

हल्दी का एक टुकड़ा (दो गाँठों के मध्य का) निरन्तर छः दिन तक मासिक धर्म के प्रारम्भ के पश्चात् यदि स्त्री खाये जैसे तीन दिन मासिक धर्म के समय और तीन दिन मासिक के पश्चात् तक तो स्त्री वन्ध्या हो जाती है॥१२-१३॥

कालाजीरीं च कच्चूरं नागकेशर संयुतम्।

हरीतकं कलौजींच क्षिपेत्कायफलं तथा॥१४॥

जलेन भावयन्कुर्या द्वटिकां वदरोपमाम्।

रजोधर्म निवृत्तौ च भक्षयेत्पयसा समम्॥१५॥

प्रत्यहं गुटिका मेकामेवं सप्ताह माचरेत्।

वन्ध्यत्व प्राप्तये योगो मुनिभिः परिकीर्तितः॥१६॥

कालीजीरी के बीज (Carum carvi), कचूर (Hedychium spicatum), नागकेशर (Mesua ferrea), हरीतक (Terminalia chebula), कलौजी (Nigella sativa), कायफल (Myrica nagi) का चूर्ण कर, इस चूर्ण को जल में गीला कर खूब मसल कर, छोटी-छोटी गोलियाँ बना ली जाय। इस गोली को दूध के साथ सात दिन तक लिया जाय। मासिक बन्द होने के पश्चात् प्रति दिन एक गोली तो स्त्री वन्ध्या हो जाती है॥१४-१६॥

त्रैवार्षिकं पलमितं मासाद्धं भक्षयेद्गुडम्।

यावज्जीवं भवेद्वन्ध्या नात्रकापि विचारणा॥१७॥

तीन वर्ष पुराना गुड़ पल मात्रा में (४८ ग्राम) निरन्तर १५ दिन तक खाने से स्थायी वन्ध्यत्व आ जाता है। इसमें कोई सन्देह नहीं॥१७॥

सर्षपं मण्डलं चैव शर्करा सकलं समम्।
पयसा ताण्डुलेनैतद्भक्तं पुष्पं विनाशयेत्॥१८॥

सर्षप (Brassica campestris) और तन्दुल को समभाग में मिलाकर और उन दोनों के बराबर शर्करा लेने से वन्ध्यत्व आ जाता है॥१८॥

तुषतोयेन संक्वाथ्य मूलमग्नि तरुद्भवम्।
पुष्यान्ते त्रिदिनं पीतं वन्ध्यत्वं नयते ध्रुवम्॥१९॥

अग्नि (चित्रक Plumbago zeylanica) के मूल को तुषतोय (काजिका Barly gruel) के साथ क्वाथ बना कर, तीन दिन लेने से (मासिक के तुरन्त बाद) निश्चित ही वन्ध्यत्व आ जाता है॥

॥ इति कुचिमार तन्त्रे सप्तमः पटलः समाप्तः ॥

अथ लोमशातनम्

सार्षपं तैल मादाय नाग चूर्ण क्षिपेत्ततः।
सप्ताह मातवे धृत्वा साधयेल्लोमशातने॥१॥

नागचूर्ण या रांगा भस्म को सरसो के तेल में मिश्रित कर सात दिन धूप में रखा जाय। इस प्रकार तैयार लेप बाह्य प्रयोग करने से बाल गिर जाते हैं॥१॥

शङ्खभस्म समादाय सप्ताहं कदली रसैः।
भावयित्वा समं तत्र हरितालं विनिक्षिपेत्।
लोमाणहरणं चैतन्मौनि राजेन कीर्तितम्॥२॥

शंखभस्म लेकर, एक सप्ताह तक कदली रस में भावित कर, उसी के बराबर हरिताल छिड़क दिया जाय। यह लेप लोमहरण करता है। यह लेप मुनिश्रेष्ठ द्वारा अविष्कृत है॥२॥

पलाश भस्म तालं च रम्भा रस विभावितम्।
लेपाल्लोमानि नश्यन्ति स्थानं याति घृतोपमम्॥३॥

पलाश भस्म (Butea monosperma) और ताल (Yellow arsenic)

को केले के रस में भावित कर, तैयार पेष्ट, बाह्य प्रयोग करने से बाल गिर जाते हैं और त्वचा भी चिकनी हो जाती है॥३॥

प्रथमं दूरतः कुर्याल्लोमं तु यथातथा।
ततोनुमर्दयेत्तत्र तैलं बरर संज्ञकम्॥४॥
वटक्षीरं पुनस्तत्र लेपयेत्सु विचक्षणः।
आजन्म तत्र लोमानि न रोहन्ति कदाचन॥५॥

पहले बाल उखाड़ कर 'बरर' नामक तेल का लेप किया जाता है, तत्पश्चात् उस पर वटक्षीर का प्रयोग करने से आजीवन बाल नहीं उगते॥

अथ प्रसवः

रौप्यकाञ्चन ताम्राणां भस्म क्षौद्र समन्वितम्।
पुष्पान्ते त्रिदिनैरेव लीढ क्षेत्रं विशोधयेत्॥६॥

रजत भस्म, स्वर्ण भस्म और ताम्र को मिश्रित कर शहद के अनुपान के साथ मासिक के पश्चात् निरन्तर तीन दिन खाने से गर्भाशय परिशोधित हो जाता है॥६॥

नागकेशर चूर्णं च स्नानान्ते त्रिदिनं पिवेत्।
पयोभुग्भर्तु संयोगे गर्भं धत्ते ततोद्ध्रुवम्॥७॥

मासिक के पश्चात् नागकेशर (Mesuaferrea) चूर्ण को तीन दिनों तक लेने के पश्चात् सम्भोग करने से निश्चित ही गर्भ रह जाता है॥७॥

अमृता वाजिगन्धार्द्रं क्वाथं सप्तदिनं पिवेत्।
पतियोग समापन्ना गर्भं सा प्राप्नु याद्ध्रुवम्॥८॥

आर्द्र या ताजा अमृता (Tinospora cordifolia) और अश्वगन्धा का क्वाथ मासिक के तत्काल बाद पीने से स्त्री सम्भोग के परिणाम स्वरूप निश्चित ही गर्भवती हो जाती है॥८॥

पुष्पोद्धृतं लक्ष्मणाया मूलं घृतं समन्वितम्।
मासावधि तुया भुङ्क्ते गर्भं सा लभतेध्रुवम्॥९॥

पुष्पित होती लक्ष्मणा के मूल को (तेलगू में इसे गोल जिदकू कहते हैं) घी के साथ एक माह तक सेवन करने से स्त्री निश्चित ही गर्भवती हो जाती है॥९॥

॥ इति कुचिमार तन्त्रे सप्तमः अष्टमः समाप्तः ॥

परिशिष्टम्

हरिताल ताल बीज सिंधुर घननाद कदली क्षारः।
 इक्ष्वाकुबीज कुनटी बचा स्नुही मूल मञ्जिष्ठाः॥१॥
 वरुण गिरिकर्णिके च स्नुही क्षीरेण सप्तधासिक्ते।
 सिक्तेक्ष्वाकुरसैरथ सम्पिष्ट्वा कल्पयेत् कल्कम्॥२॥
 तत् कल्काद्धं तैलं कन्दलिकाबहुल वारिणा पक्त्वा।
 रोमोत्पाटन पूर्वं कुरु लेपं तेन तैलेन॥३॥

हरिताल, तालबीज (*Borassus flabellifer*), सैन्धवलवण, सिन्धुर घननाद (राजमार्तण्ड के अनुसार तन्दुलिय (*P. V. S. D. K. Amaranthus spinosus*) कदलीसार, इक्ष्वाकुबीज (कड़वी ककड़ी *Lagemaria siceraria*) कुनटी, धान्यक (*Corriadrum sativum*) या मैनसिला (*Realgar*), वच, स्नुही की जड़, मंजिष्ठा, वरुण (*Craleva religiosa*), गिरि कर्णिक (*Clitoria ternatea*) को मिश्रित कर उसे स्नुही के दूध (*Ephorbia nerifolia*) में निरन्तर सात दिनों तक भावित कर, पश्चात् इक्ष्वाकु (*Logenaria siceraria*) के स्वरस में मिश्रित कर पीस लिया जाय। इस लेप के आधे के बराबर तिल का तेल मिला कन्दलिका या सूरण का रस और बहुल के स्वरस (वी. पी. एन के अनुसार बहुल *Sthulela Amomum subulatum*) से मिश्रित कर तब तक पकाया जाय, जब तक तेल मात्र शेष न रह जाय। इस तेल का वाह्य प्रयोग बालों को गिरा देता है॥१-३॥

गोरेकं वर्ण भाजः पयसावन्ध्यापि धारयेद्गर्भम्।
 पीत्वा केकि शिखायाः पुत्रजीवस्य वा मूलम्॥४॥

के. की. शिखा (मयूर शिखा चुनेकर के द्वारा सम्पादित बी. पी. एन. के अनुसार (Actionpteris dichotoma or celosia cristata) या के. निस्तेश्वर द्रव्यगुण प्रयोग विज्ञान के अनुसार जिसे लोक भाषा में निमाली जत्थू मोक्का कहा जाता है) और पुत्रंजीवा की जड़ (Putranjiva roxburghii) के साथ उसी रंग की गाय का दूध लेने से, वन्ध्या स्त्री भी गर्भवती हो सकती है॥४॥

पीत्वाऽमुनैव पयसा रजसि स्नाता च लक्ष्मणा मूलम्।

सप्तक्षालित शाली भक्तं भक्त्वा सुतं लभते॥५॥

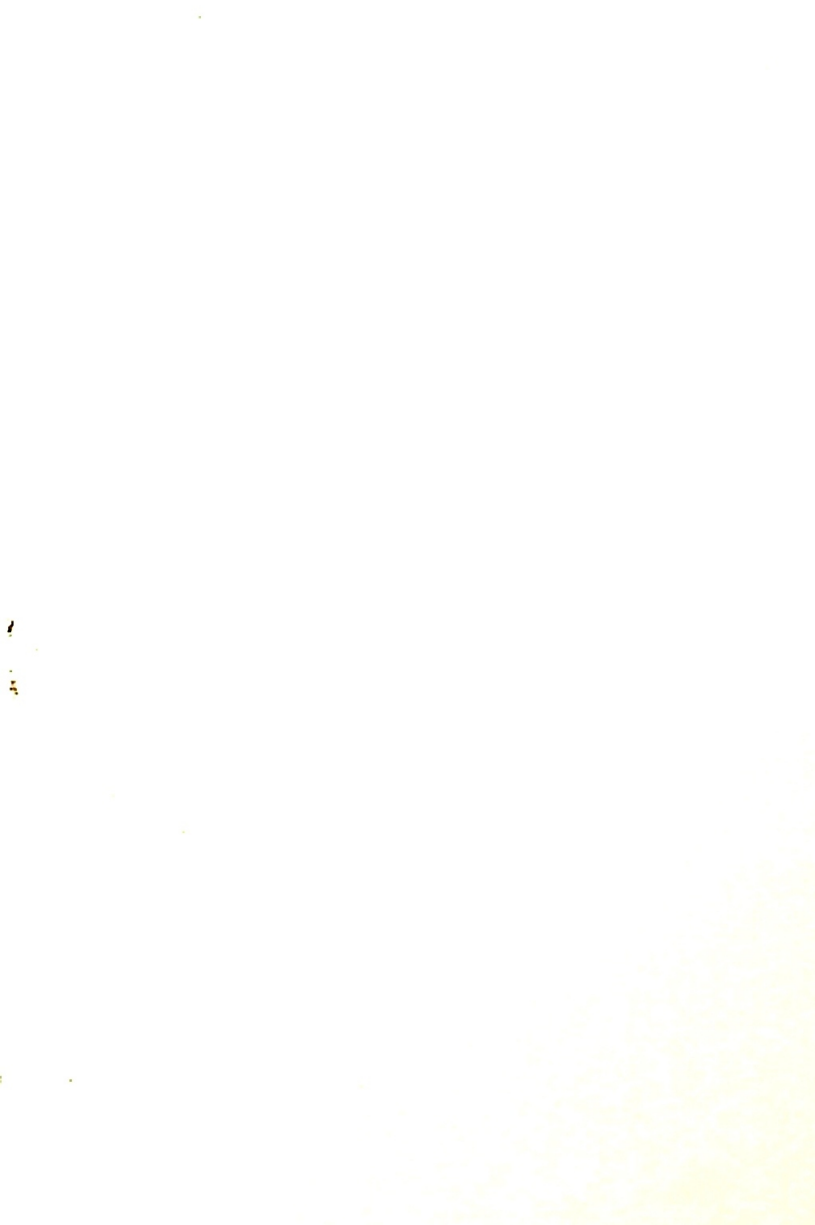
मासिक के बाद एकवर्ण की गाय के दूध के साथ लक्ष्मणार मूल तथा सात प्रकार के जल से धोए गए शालि चावल का भात खाने से, वन्ध्या स्त्री भी गर्भवती हो सकती है॥५॥

गौ चंदन दण्डोत्पल विष्णुकान्ता कृताञ्जलीचूर्णम्।

रजसि स्नाता पीत्वा गर्भवहेत् वन्ध्याऽपि॥६॥

गौचन्दन या गोपीचन्दन का विचूर्ण उत्पल (नीलोत्पल) (Nymphaea stellata) विष्णुकान्ता तथा कृताञ्जलिलज्जालु, गौ चन्दन या गोपीचन्दन का विचूर्ण उत्पल, (नीलोत्पल Nymphaea stellata), विष्णुकान्ता तथा कृताञ्जली लज्जाजु के चूर्ण को मिला कर मासिक के बाद उपयोग कर, वन्ध्या स्त्री भी पुत्रवती हो सकती है।

॥ इति कुचिमार तन्त्रे नवम् पटलः परिशिष्ट भागः समाप्तम्॥





Kucimāra Tantram

Muni Kucimara's
(For Better Sexual Life)

Text with English Translation

By Dr. Goli Pnechala Prasad

Kucimara Tantra is an ancient text dealing mainly on protection and beautification of male and female genitalia along with other therapies like vasikaranam etc., which are not believed by the majority of the scientific population. This book also deals with few scientific descriptions relevant to present day needs. Probably, this is the ancient work dealing with Kanya karanam, Dravikarnam etc. There are many prescriptions to promote enjoyment in sex, maintenance of anatomical & physiological functions of genitalia. Present day youth are more crazy of good appearance and sex. The author, Muni Kucimara, aims at providing the answers to all the fancies of the youth.

Though the book is small containing 164 stanzas, more than 200 herbal, mineral and animal products have been used in the formulations. Majority of the drugs are easily available at low cost and are proved to be efficacious.

It is believed, this English translation, will attract the attention of the scientific world for further research and authenticate the scientificity of these prescriptions.

Price : Rs. 50.00

अष्टांगहृदयसंहिता । श्रीमद्वाहटाचार्यविरचिता 'इन्दु' विरचितया

शशिलेखाख्यया व्याख्या समुल्लसिता, सम्पादको भूमिका लेखकश्च

अष्टवैद्यन् वैद्यमाधम चेरियानारायन् नम्बूतिरी

शीघ्र

भैषज्यकल्पनाविज्ञान (सचित्र) (वैदिक काल से आज तक)

लेखक-डॉ. विनोद चन्द्र चौबे

225.00

Also can be had from : Chowkhamba Krishnadas Academy, Varanasi.

Price : Rs. 35.00